हमारी बात

हम सबला का यह अंक हमारे युवाओं के नाम है। दुनिया को बदलने को उत्सुक, अपनी मर्ज़ी से अपना जीवन तराशने के लिए तैयार युवाओं के नाम।

हमारे इस देश में बेटियों को बड़ी तादाद में मारा जा रहा है। उन पर मनाहियों और पाबंदियों के अंकुश लगाए जा रहे हैं। कम पोषण, कम शिक्षा, कम अवसर और कम प्यार हमारी किशोरियों के हिस्से में आता है।

दूसरी ओर बेटों पर हम अपनी जान न्योछावर कर देते हैं। वे अपने मनचाहे खेल खेलते हैं, मनपसंद कपड़े पहनते हैं और बचपन से ही अपनी मनमानी करने के आदी हो जाते हैं।

तो क्या हमें इसमें कुछ गलत नहीं लगता? क्या बेटी और बेटे में यह भेदभाव, यह फ़र्क़ सही है? क्या हम यह वाकई मानते हैं कि बेटियां बेटों से कम होती हैं?

हम सबला के इस अंक में हम अपनी किशोरियों का जश्न मना रहे हैं। हमारा मानना है कि बेटी और बेटे दोनों को समान प्यार, समान भोजन, समान शिक्षा और समान अवसर मिलने चाहिए। यह न सिर्फ़ ज़रूरी है बल्कि हर बच्चे का अधिकार भी है।

समानता की शुरूआत हमारे घर, समुदाय और समाज से ही होनी चाहिए। शोषण, दमन और भेदभाव से आज़ाद किशोरी और किशोर ही भविष्य में उन ऊंचाइयों, सपनों और लक्ष्यों को पाने का हौसला रखेंगे जो उन्हें सशक्त, जीवन कौशल से युक्त और परिपूर्ण इंसान बना सकता है।

तो आइए आज ही शुरूआत करें। बेटियों को भी मान-सम्मान और प्यार से सींचे, उन्हें प्रेरणा और सहयोग दें। उनकी पैदाइश पर खुशियां मनाएं और उनके व्यक्तित्व को सराहें।

–जुही